قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ﴿۱﴾ لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ﴿۲﴾ وَ لَاۤ اَنْتُمْ

तुम फ़रमाओ ऐ काफ़िरो[2] न मैं पूजता हूं जो तुम पूजते हो और न तुम

عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ﴿۳﴾ وَ لَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ﴿۴﴾ وَ لَاۤ اَنْتُمْ

पूजते हो जो मैं पूजता हूं और न मैं पूजूंगा जो तुम ने पूजा और न तुम

عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ﴿۵﴾ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَ لِيَ دِيْنِ ﴿۶﴾

पूजोगे जो मैं पूजता हूं तुम्हें तुम्हारा दीन और मुझे मेरा दीन[3]

اٰياتها ٣ ﴿١١٠ سُوْرَةُ النَّصْرِ مَدَنِيَّةٌ ١١٤﴾ ركوعها ١

सूरए नस्र मदनिय्या है, इस में तीन आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ﴿۱﴾ وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ

जब **अल्लाह** की मदद और फ़त्ह़ आए[2] और लोगों को तुम देखो कि **अल्लाह** के दीन में फ़ौज फ़ौज

اللّٰهِ اَفْوَاجًا ﴿۲﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ﴿۳﴾

दाख़िल होते हैं[3] तो अपने रब की सना करते हुए उस की पाकी बोलो और उस से बख़्शिश चाहो[4] बेशक वोह बहुत तौबा क़बूल करने वाला है[5]

अल्लाह की पनाह कि मैं उस के साथ ग़ैर को शरीक करूं, कहने लगे तो आप हमारे किसी मा'बूद को हाथ ही लगा दीजिये हम आप की तस्दीक़ कर देंगे और आप के मा'बूद की इ़बादत करेंगे, इस पर येह सूरए शरीफ़ा नाज़िल हुई और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मस्जिदे ह़राम में तशरीफ़ ले गए, वहां कुरैश की वोह जमाअ़त मौजूद थी, हुज़ूर ने येह सूरत उन्हें पढ़ कर सुनाई तो वोह मायूस हो गए और हुज़ूर के और हुज़ूर के अस्ह़ाब के दरपै ईज़ा हुए। **2 :** मुख़ात़ब यहां मख़्सूस काफ़िर हैं जो इ़ल्मे इलाही में ईमान से मह़रूम हैं। **3 :** या'नी तुम्हारे लिये तुम्हारा कुफ़्र और मेरे लिये मेरी तौह़ीद और मेरा इख़्लास और मक़्सूद इस से तहदीद है। "وَهٰذِهِ الْاٰيَةُ مَنْسُوْخَةٌ بِاٰيَةِ الْقِتَالِ" (या'नी और येह आयत क़िताल की आयत से मन्सूख़ है) **1 :** "सूरए नस्र" मदनिय्या है इस में एक रुकूअ़, तीन आयतें, सतरह कलिमे, सतत्तर ह़र्फ़ हैं। **2 :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के लिये दुश्मनों के मुक़ाबले में। इस से या आ़म फ़ुतूह़ाते इस्लाम मुराद हैं या ख़ास फ़त्हे़ मक्का। **3 :** जैसा कि बा'दे फ़त्हे़ मक्का हुवा कि लोग अक़्त़ारे अर्ज़ से शौक़े ग़ुलामी में चले आते थे और शरफ़े इस्लाम से मुशर्रफ़ होते थे। **4 :** उम्मत के लिये **5 :** इस सूरत के नाज़िल होने के बा'द सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने "سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ" की बहुत कसरत फ़रमाई। ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि येह सूरत ह़ज्जतुल वदाअ़ में ब मक़ामे मिना नाज़िल हुई, इस के बा'द आयत "اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ" नाज़िल हुई, इस के नाज़िल होने के बा'द अस्सी रोज़ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने दुन्या में तशरीफ़ रखी, फिर आयत "الكلالة" नाज़िल हुई, इस के बा'द हुज़ूर पचास रोज़ तशरीफ़ फ़रमा रहे, फिर आयत "وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ" नाज़िल हुई, इस के बा'द हुज़ूर इक्कीस रोज़ या सात रोज़ तशरीफ़ फ़रमा रहे। इस सूरत के नाज़िल होने के बा'द सह़ाबा ने समझ लिया था कि दीन कामिल और तमाम हो गया तो अब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم दुन्या में ज़ियादा तशरीफ़ न रखेंगे, चुनान्चे ह़ज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ येह सूरत सुन कर इसी ख़याल से रोए, इस सूरत के नाज़िल होने के बा'द सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ख़ुत्बे में फ़रमाया कि एक बन्दे को **अल्लाह** तआ़ला ने इख़्तियार दिया,

www.dawateislami.net